प्रकाशन तिथि : 01 सितम्बर, 2024
प्रेषण तिथि : 04 सितम्बर, 2024

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 28 | अंक 12 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'क्षात्रशक्ति के लुप्त होने से फैलती है अराजकता'

(ग्यारह प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न, 1200 शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण)

आज सारे संसार में जो अराजकता फैली हुई है, सारे राष्ट्र में जो भ्रष्टाचार फैला हुआ है, उसके पीछे कारण क्या है? उसको यदि हम जानने का प्रयास करेंगे तो पता चलेगा कि इसका कारण है - क्षात्रशक्ति का विलुप्त होना। जब-जब क्षात्रशक्ति विलुप्त हुई है, चाहे वह भारत देश में हो या अन्य किसी राष्ट्र में हो, तब-तब इसी प्रकार का वातावरण फैला है। चाहे वह रावण का राज्य हो, चाहे कंस या दुर्योधन का राज्य हो, जब-जब यह क्षात्रशक्ति क्षीण हुई है, तब-तब इस प्रकार की अराजकता बढ़ती चली गई है। जो इस अराजकता को देखकर भी अनदेखा कर लेता है वह ज्येष्ठ नहीं हुआ करता है, वह आगे चलने वाला नहीं होता है, वह श्रेष्ठ पुरुष नहीं होता है, वह मार्ग दिखाने वाला नहीं होता है, वह क्षत्रिय नहीं होता है। जिस प्रकार हनुमान अपनी शक्ति को भूल गए थे, उसी प्रकार हम भी क्षात्रशक्ति को भूल गए हैं। हम भी हनुमान की भांति सात समुद्र पार करके उस संजीवनी बूटी को ला सकते हैं जो हमारे समाज को नवजीवन प्रदान कर सकती हैं लेकिन हम उस शक्ति को भुला बैठे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ जामवंत की भांति हमारी सोई हुई उस क्षात्रशक्ति को जगाने का कार्य कर रहा है। लेकिन इसकी शर्त क्या है? हमें उस जामवंत की बात को सुनने का प्रयास करना पड़ेगा, उस जामवंत पर विश्वास करना पड़ेगा और यदि हम संघ पर विश्वास कर लेते हैं तो वह संजीवनी बूटी हम भी हमारे समाज के लिए ला सकते हैं। लेकिन इसके लिए जागना पड़ेगा, सोते हुए यह काम नहीं हो सकता। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने भीलवाड़ा के त्रिवेणी में स्थित सुमेरगढ़ रिजॉर्ट में आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों को प्रदत्त स्वागत उद्बोधन में कही। 23 से 26 अगस्त तक आयोजित इस शिविर में उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, कोटा, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, सलूंबर, जोधपुर, प्रतापगढ़, मंदसौर (मध्यप्रदेश), टोंक आदि स्थानों से 25 वर्ष से अधिक आयु के 150 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

हरसाणी के सपूत नखत सिंह अरुणाचल में हुए शहीद

बाड़मेर जिले के हरसाणी गांव के निवासी एवं भारतीय सेना में हवलदार के रूप में सेवाएं दे रहे नखत सिंह भाटी 27 अगस्त को अरुणाचल प्रदेश में एक दुर्घटना में शहीद हो गए। 28 अगस्त को उनकी पार्थिव देह पैतृक गांव हरसाणी पहुंची जहां सैन्य सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। स्थानीय सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल, शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी, बाड़मेर जिलाधिकारी निशांत जैन, बाड़मेर जिला पुलिस अधीक्षक नरेंद्र सिंह मीणा, भाजपा नेता स्वरूप सिंह खारा, पूर्व विधायक अमीन खान, खंगार सिंह सोढ़ा सहित हजारों क्षेत्रवासी शहीद की अंतिम यात्रा में शामिल हुए और उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि दी।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सच्चे अर्थों में राष्ट्रनायक हैं दुर्गादास राठौड़ः संघप्रमुख श्री

(देशभर में उत्साह पूर्वक मनाई राष्ट्रनायक दुर्गादास राठौड़ की जयंती)

दुर्गा दास जी को एक महान वीर के रूप में स्मरण किया जाता है। जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह के पुत्र अजीत सिंह की रक्षा और उनके लालन-पालन के लिए दुर्गादास जी द्वारा किए गए संघर्ष को उनकी स्वामीभक्ति के रूप में याद किया जाता है लेकिन दुर्गादास जी के व्यक्तित्व को केवल वीरता अथवा स्वामीभक्ति तक सीमित नहीं किया जा सकता बल्कि सच्चे अर्थों में वे एक राष्ट्रनायक थे। उन्होंने जिस प्रकार का जीवन जीया, वह राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला और कर्त्तव्य पालन का मार्ग दिखाने वाला है। उनके चरित्र का प्रत्येक गुण हमारे लिए एक ऐसा आदर्श बन सकता है जिसे आत्मसात करके हम समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा कर सकते हैं। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने डीडवाना स्थित हिम्मत राजपूत छात्रावास में 13 अगस्त को आयोजित राष्ट्रनायक दुर्गादास राठौड़ जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि यदि हम क्षत्रिय के हित में जीवन जीना शुरू कर दें, तो निश्चित रूप से समाज की पीड़ा का निवारण हो सकेगा। लेकिन क्षत्रिय का हित किसमें है, यह हम भूल जाते हैं। क्षत्रिय का वास्तविक हित क्षात्रधर्म के पालन में है। दुर्गादास जी इस बात को जानते थे और इसीलिए उन्होंने अपना जीवन क्षत्रिय के हित में बिताया अर्थात क्षात्रधर्म का पालन करते हुए बिताया। संघप्रमुख श्री ने आगे कहा कि जितना हमसे हो सकता है वो काम कर लेना चाहिए चाहे वो राजनीति के क्षेत्र में हो, सामाजिकता के क्षेत्र में हो, धार्मिकता के क्षेत्र में हो या अन्य किसी क्षेत्र में हो। जिस प्रकार भगवान राम के लिए सेतु का निर्माण करते समय गिलहरी ने अपनी क्षमता अनुसार योगदान दिया था उसी भाव के साथ हमें भी समाज में अपना योगदान देना चाहिए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पोकरण विधायक प्रतापपुरी ने कहा कि समाज की युवा पीढ़ी में संस्कारों का निर्माण करना आवश्यक है। सद्संस्कारों से ही दुर्गादास जी जैसे महापुरुषों का निर्माण होता है। नवलगढ़ विधायक विक्रम सिंह जाखल ने कहा कि दुर्गादास जी का जीवन हमें यह शिक्षा देता है कि किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध हमें डटकर खड़ा होना चाहिए। अपने लिए जीने वालों को नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीने वालों को ही संसार याद किया करता है। भाजपा नेता जितेंद्र सिंह जोधा ने कहा कि हमें आलोचना अथवा दूसरों की बुराई का मार्ग नहीं अपनाना चाहिए बल्कि समाज के विकास में हम किस प्रकार से योगदान दे सकते हैं, इसी पर चिंतन करना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान शिक्षा एवं खेल के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली समाज की 65 प्रतिभाओं को भी स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

‘क्षात्रशक्ति के लुप्त होने से फैलती है अराजकता’

इशरोल

हदां

दुलमेरा

(पेज एक से लगातार)

शिविर के अंतिम दिन अपने विदाई उद्बोधन में संघप्रमुख श्री ने कहा कि मैं नहीं जानता कि आपने अपनी झोली में क्या भरा है लेकिन फिर भी आपके चेहरे को देखकर, आपके अनुभवों को सुनकर मुझे यह अनुभव हो रहा है कि आप सब लोगों ने बहुत कुछ पाया है। जो पाया है वह आपके अंतर में निहित है। पहले दिन ही आपको बता दिया गया था कि जो कुछ हमारे पास में भार है उसे हम बाहर ही रख दें। किसी भी यात्रा में जितना अधिक भार हमारे पास होता है उतनी ही अधिक उस यात्रा में दुविधा होती है। जो जितना भार कम करता है वह उतनी ही तीव्र गति से यात्रा को पूरा कर पाता है। यहां भी जिसने इन तीन दिनों में अपने भार को हल्का करके इस यात्रा के साथ में अपने कदमों को चलाया है उसने बहुत कुछ पाया है, इसमें कोई संदेह नहीं है। हमने जो कुछ जाना है, जो कुछ प्राप्त किया है, उसे संसार को भी देना है और संसार को देते वक्त क्योंकि संसार के संपर्क में हम आएंगे तो वहां का विषमय वातावरण हमारे ऊपर हावी हो सकता है। इसलिए संघ से श्रेष्ठता को प्राप्त करने और फिर उस श्रेष्ठता को संसार को देने का यह दोहरा काम हम तभी कर पाएंगे जब हम सजग रहेंगे, जब हम जागृत रहेंगे। शिविर के दौरान 24 अगस्त को संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में सरकारी अधिकारियों का स्नेह मिलन भी रखा गया जिसमें भीलवाड़ा व चितौड़गढ़ जिलों में विभिन्न विभागों में कार्यरत अधिकारी शामिल हुए एवं अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए समाज के लिए वे किस प्रकार सहयोगी हो सकते हैं, इस पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त 16 से 20 अगस्त की अवधि में विभिन्न स्थानों पर दस प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए जिनमें 1050 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नागौर संभाग के लाडनूं प्रांत के छपारा गांव में स्थित राज बाईसा मंदिर परिसर में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 16 से 19

डेल

अगस्त तक आयोजित हुआ जिसमें 84 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन विक्रम सिंह ढींगसरी ने किया। शिविर के विदाई कार्यक्रम में नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जोधपुर संभाग के फलोदी प्रांत के अखाधना गांव में एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 17 से 20 अगस्त की अवधि में आयोजित हुआ जिसका संचालन जोधपुर संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक ने किया। शिविर के अंतिम दिन समापन कार्यक्रम में उन्होंने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि आपने जिन क्षत्रियोचित गुणों का अभ्यास इस शिविर में किया है, उनको अपने जीवन में ढालें एवं सुसंस्कारित क्षत्रिय बनें। शिविर में शेखासर, जैमला, धौलिया, बारू, दुर्जनी, मनचितिया, ढालेरी, सेतरावा, चांदसमा, अवाय, भादड़िया, लोड़ता, पीलवा, सिड्डा, बामणू, देणोक आदि गांवों के 133 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था का दायित्व समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर संभाला। जालौर संभाग में रानीवाड़ा क्षेत्र के धामसीन गांव में स्थित आशापुरा माताजी मंदिर में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में सम्पन्न हुआ जिसका संचालन राजेंद्र सिंह भंवराणी ने किया। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अधिकार की बजाय कर्तव्य की बात करता है, वही कर्तव्य जिसका हमारे पूर्वजों ने निर्वहन किया और जिसके फलस्वरूप क्षत्रिय समाज में जन्म लेना आज भी गौरव का विषय है। इस शिविर में आप सभी उस कर्त्तव्य को पहचानें और उसके पालन का अभ्यास करें। शिविर में धामसीन, मेडक, जोड़वास, डूंगरी, जाखड़ी, रतनपुर, कागमाला, चांडपुरा , उचमत, जीतपुरा, वाडा भवजी, करड़ा, सेवाडा, वडवज, रायपुर, सुरावा, पांचला, टीटोप आदि गांवों के 130 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था का जिम्मा धामसीन के स्थानीय समाजबंधुओ ने मिलकर संभाला। शिविर के दौरान दुगार्दास जी की जयंती मनाई गई। जालौर संभाग के सांचौर प्रांत के इशरोल गांव में स्थित सिंगोतर माता मंदिर में भी 17 से 20 अगस्त तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। महोब्बत सिंह धींगाणा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने एक गीत में लिखा है कि - थारी अब पारख होसी रे। हमारी भी वास्तविक परीक्षा इस शिविर से वापिस जाने के बाद प्रारंभ होगी। यहां हमने क्षत्रियोचित संस्कारों का जो अभ्यास किया वह समूह में किया इसलिए सरल था। लेकिन यहां से जाने के बाद संसार की आपाधापी में इस अभ्यास को बनाए रखना बहुत कठिन होगा। इस परीक्षा में खरा उतरने के लिए संघ के संपर्क में बने रहें। शिविर में सिवाड़ा, डावल, डबाल, बावरला, तैतरोल, दुठवा, कारोला, मरठवा, रतोला, केरिया, सागडवा, किलवा, आकोली, चौरा आदि गांवों के 115 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। सांचोर प्रान्त प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। विदाई कार्यक्रम में राव मोहन सिंह चितलवाना, हिन्दू सिंह दूठवा, गजे सिंह चारणीम, छैलसिंह जानवी, जितेन्द्र सिंह, सुमेर सिंह इशरोल सहित अनेकों स्थानीय समाजबंधु शामिल हुए। बीकानेर संभाग के लूणकरणसर प्रांत के दुलमेरा गांव में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में आयोजित हुआ। भागीरथ सिंह सेरूणा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस शिविर में चार दिनों तक हमें गीता के आधार पर संस्कारित जीवन जीने का व्यावहारिक अभ्यास खेल, चर्चा, बौद्धिक, प्रार्थना, यज्ञ आदि गतिविधियों के माध्यम से करवाया जाएगा। हमारे भीतर सद्गुणों का विकास और दुर्गुणों का विनाश करने के लिए हमें सामूहिक जीवन जीने का अवसर यहां प्राप्त होगा। जागृत रहकर इस अवसर का सदुपयोग करें। शिविर में दुलमेरा, किस्तुरिया, सोढ़वाली, मुसलकी, झंझेऊ, पुंदलसर, मकड़ासर आदि गांवों के 70 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। भारतीय पंचांग के अनुसार श्रावण शुक्ला चतुर्दशी को दुगार्दास जी की जयंती भी मनाई गई। मोहन सिंह बीका, छैलू सिंह, कुम्मेर सिंह, नारायण सिंह किस्तुरिया ने स्थानीय समाजबंधुओ के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया।

बीकानेर संभाग के ही श्रीकोलायत प्रांत के हदां गांव में भी प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ जिसका संचालन राजेंद्र सिंह आलसर ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी पीड़ित होकर 78 वर्ष पूर्व श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की थी। पूज्य ने हमें बताया कि अपने आप का निर्माण करके ही समाज और राष्ट्र के निर्माण में हम सच्चा सहयोग दे सकते हैं। इसीलिए संघ हमें स्वयंसेवक बनने का प्रशिक्षण देता है। शिविर के स्वागत कार्यक्रम में राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री भंवर सिंह भाटी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। शिविर में क्षेत्र के विभिन्न गांवों के 125 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। बाड़मेर संभाग के शिव प्रांत के बरियाड़ा गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में आयोजित हुआ। वीर सिंह गंगासरा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि त्याग और बलिदान की क्षत्रिय परंपरा, जो वर्तमान में लुप्त होती जा रही है, उसे नवजीवन प्रदान करने का कार्य संघ कर रहा है। शिविर में कोटड़ा, देवका, बरियाड़ा, धारवी, भियाड़, बलाई आदि गांवों के 75 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। भगवान सिंह, नग सिंह, जनक सिंह, धीर सिंह, दीप सिंह आदि ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिव प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भियाड़ सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। इसी अवधि में बाड़मेर संभाग के चौहटन प्रांत के चाडी गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए गणपत सिंह बूठ ने शिविरार्थियों से कहा कि हमारा जीवन इस समाज की थाती है इसलिए इसका उपयोग केवल अपने लिए नहीं करना है। हम समाज के प्रति अपना ऋण कैसे चुका सकते हैं इसका मार्ग हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ बताता है। शिविर में चौहटन, चाडी, चाडार , रामसर, भाचभर, गंगाला, गडरा रोड, देदूसर, खारा, दुधवा, सनाउ आदि गांवों के 80 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में शिविरार्थियों

बरियाड़ा

द्वारा दुगार्दास राठौड़ जयंती तथा रक्षाबंधन भी मनाया गया। प्रान्त प्रमुख लाल सिंह आकोड़ा सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। उत्तर गुजरात संभाग के थराद प्रांत के डेल गांव में भी इसी अवधि में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ जिसमें क्षेत्र के 39 गांवों के 136 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे जीवन में एक ऐसी ज्योति जगाने आया है जिससे हमारा जीवन तो प्रकाशित होगा ही, समाज में भी प्रकाश फैलेगा। श्री डेल राजपूत समाज द्वारा व्यवस्था का दायित्व संभाला गया। शिविर में 19 अगस्त को एक स्नेहमिलन का आयोजन कर-के दुगार्दास जयंती भी मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी में दुगार्दास जी के जीवन चरित्र के बारे में बताते हुए कहा कि संघ भी ऐसे ही महापुरुषों के निर्माण की एक पाठशाला है। संभाग प्रमुख वनराज सिंह भैंसाणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

जैसलमेर व बीकानेर में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जैसलमेर जिले की दो दिवसीय कार्यशाला जैसलमेर शहर स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागीय कार्यालय तनाश्रम में 24-25 अगस्त को आयोजित हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कार्यशाला में उपस्थित सहयोगियों से चर्चा करते हुए कहा कि व्यक्तित्व निर्माण समाज व राष्ट्र निर्माण की प्रथम सीढी है। उन्होंने बताया कि व्यक्ति का जीवन समाज सापेक्ष होता है, वह समाज से निरपेक्ष होकर जीवन नहीं जी सकता। समाज की पीड़ा को समाज का प्रत्येक सदस्य अपनी पीड़ा समझे व उसके निदान का उपाय करे। इन सब के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ निरंतर समाज की युवा शक्ति को प्रशिक्षण दे रहा है। कार्यशाला में समाज में राजनैतिक चेतना को जगाने एवं सकारात्मक मतदान से समाज का राजनैतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने हेतु गठित श्री प्रताप फाउंडेशन के बारे में भी विस्तार से बताया गया एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था में समाज की भूमिका, आगामी पंचायती राज चुनाव में नवीन मतदाताओं को जोड़ने, सही व्यक्तित्व चयन, अधिकतम मतदान इत्यादि बिंदुओं पर चर्चा की गई एवं सभी प्रतिभागियों ने अपने विचार रखे। कार्यशाला के दौरान जिले में फाउंडेशन की आगामी गतिविधियों की कार्य योजना तैयार की गई एवं तहसीलवार बैठकें आयोजित करने की जिम्मेदारी सहयोगियों द्वारा ली गई। कार्यशाला में कमल सिंह भेसड़ा, सूरज पाल सिंह बडोड़ा गांव, डॉ चंदन सिंह रामदेवरा, डॉ सुमेर सिंह तेजमालता, भाजयुमों जिलाध्यक्ष उदय सिंह बडोड़ा गांव, प्रोफ़सर तेजवीर सिंह सुल्ताना, दशरथ सिंह छतांगढ, व्याख्याता तने सिंह, हरी सिंह हमीरा, नवीन सिंह मेघा, गोपाल सिंह कुंडा, जोगराज सिंह सिहड़ार, विक्रम सिंह झिनझनियाली, एडवोकेट अरविंद सिंह सत्याया, चंद्रवीर सिंह हमीरा सहित 70 सहयोगियों ने भाग लिया। 26 अगस्त को बीकानेर के सहयोगियों की कार्यशाला रखी गई जिसमें बीकानेर जिले में फाउंडेशन के कार्य को गति देने के लिए विस्तार से चर्चा हुई।

बोरावड़ में क्षत्रिय कर्मचारी स्नेहमिलन का आयोजन

मकराना क्षेत्र के बोरावड कस्बे में मकराना क्षेत्र में कार्यरत क्षत्रिय कर्मचारियों का स्नेहमिलन कार्यक्रम 22 अगस्त को आयोजित हुआ। विभिन्न राजकीय विभागों में कार्यरत कर्मचारी एवं निजी विद्यालयों के संचालक समाजबंधु शामिल हुए। दिलीप सिंह चौहान, विनय सिंह नाथावात, जेठू सिंह खारडिया, मातादिन सिंह सिरसू, संग्राम सिंह गिंगालिया, नरेंद्र सिंह नगवाड़ा, रवि सिंह मामडोली, हुकम सिंह आसरवा सहित अनेक वक्ताओं ने कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए समाज में सहयोगी भाव विकसित करने, युवाओं में उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करने एवं नई पीढ़ी में संस्कारों के निर्माण हेतु कार्य करने की बात कही। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने

श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में बताया एवं नागौर संभाग में आयोजित होने वाले संघ के शिविरों एवं अन्य गतिविधियों की जानकारी दी।

गेलासर (मकराना) में स्नेहमिलन का आयोजन

मकराना प्रांत के गेलासर गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन 22 अगस्त को आयोजित हुआ। संघ के नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली की जानकारी देते हुए संभाग में होने वाली सांघिक गतिविधियों के बारे में बताया। बैठक के दौरान गांव में 10 से 13 अक्टूबर तक एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का भी निर्णय लिया गया एवं शिविर के स्थान एवं संख्या के लिए संपर्क आदि पर चर्चा हुई। सरपंच संघ के अध्यक्ष दलीप सिंह गेलासर ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा

कि समाज के बालकों में संस्कारों का निर्माण करना आवश्यक है। उन्हें हमारे पूर्वजों के शौर्य, त्याग और बलिदान के इतिहास की जानकारी के साथ ही वर्तमान परिस्थितियों और चुनौतियों से भी अवगत कराना चाहिए। कार्यक्रम में अनेकों स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे।

जूना फोर्ट (बाड़मेर) में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की भ्रमण कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की एकदिवसीय भ्रमण कार्यशाला का आयोजन बाड़मेर के ऐतिहासिक जूना फोर्ट में 24 अगस्त को किया गया जिसमें बाड़मेर जिले से 50 बंधुओ ने भाग लिया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने प्रतिभागियों से संवाद करते हुए कहा कि जूना फोर्ट जैसे ऐतिहासिक स्थल हमारे गौरव के केंद्र हैं, ये हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। हमें यहां लगातार आते रहना चाहिए। हम यहां आएंगे, इन स्थलों की सार-संभाल करेंगे, सफाई आदि करेंगे तो ये संरक्षित रहेंगे। अपने परिवार के बच्चों को इन ऐतिहासिक स्थलों पर लाकर इनके इतिहास के बारे में बताएंगे तभी उनका अपनी जड़ों से जुड़ाव हो पाएगा। उन्होंने आगे चर्चा में बताया कि समाज में हमें जिस भी प्रकार का अभाव दिखता है उसे दूर करने के क्या उपाय हो सकते हैं, हमें इस पर विचार करना चाहिए। हर कार्य को करने के लिए टीम की आवश्यकता होती है। एक ही विचार के लोगों द्वारा निरंतर संपर्क में बने रहने पर टीम का निर्माण होता है। फाउंडेशन भी एक टीम है जिसका उद्देश्य यही है कि सकारात्मक सामाजिक भाव के लोग इसके माध्यम से संघ से जुड़ सकें। संघ एक ऐसा ऊर्जा का स्त्रोत है जिससे हम यदि जुड़ जाएं तो फिर सामाजिक कार्य करने में शिथिलता और निराशा नहीं आती। कार्यशाला के पश्चात जूना गांव में स्थित श्री आशापूर्णा माता मंदिर में सभी ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

गोहिलवाड़ व उत्तर गुजरात संभाग में संपर्क यात्राओं का आयोजन

गोहिलवाड़ संभाग में कच्छ जिले की अबडासा तहसील के खुडा, कोठारा और नखत्राण गांवों में श्री क्षत्रिय युवक संघ की संपर्क यात्रा का आयोजन 11 अगस्त को किया गया। दोपहर 2:00 बजे खुडा गांव में संपर्क बैठक का आयोजन किया गया जिसमें गांव के समाजबंधुओं को संघ एवं पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया गया। 4:30 बजे कोठारा गांव स्थित आशापुरा माँ मंदिर में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कोठारा के अलावा खिरसरा, पइया, वाडापद्धर, विंझाण, परजाऊ, आरीखाना आदि गांवों के समाजबंधु भी शामिल हुए। रात्रि 8:30 बजे नखत्राण स्थित महिपतसिंहजी केशरीसिंहजी जाडेजा राजपूत छात्रावास में भी संपर्क बैठक का आयोजन किया गया जिसमें बोर्डिंग में पढ़ने वाले छात्र एवं व्यवस्थापक और नखत्राण के स्थानीय समाजबंधु शामिल हुए। बैठकों के पश्चात तीनों गांवों में श्री क्षत्रिय युवक संघ की साप्ताहिक शाखा प्रारंभ करने का भी निर्णय लिया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के गोहिलवाड़ संभाग प्रमुख प्रवीण सिंह धोलेरा एवं केन्द्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची सहयोगियों सहित संपर्क यात्रा में उपस्थित रहे। 15 अगस्त को मुदरा तहसील के रामगढ़ लफरा गांव में भी संपर्क बैठक का आयोजन किया गया। 15 अगस्त को उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रांत में भी मातृशक्ति संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया जिसके तहत कड़ा, कांसा और पीलुदरा गांवों में संपर्क किया गया। तीनों स्थानों पर मातृशक्ति शाखा भी प्रारंभ की गई। निशाबा लिंबोणी, तन्वीबा छेल्लीघोडी, शुभांगिनी कंवर बा ढीमा आदि स्वयंसेविकाएं यात्रा में शामिल रहीं। संपर्क यात्रा के दौरान राष्ट्रनायक दुर्गादास जी की जयंती भी मनाई गई।

संपादकीय

प्रेरणा केंद्र हैं हमारी ऐतिहासिक धरोहरें

किसी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र के मूल्य और आदर्श उनके जीवन की दिशा तय किया करते हैं। ये मूल्य और आदर्श जितने श्रेष्ठ और महान होते हैं व्यक्ति, समाज और राष्ट्र भी उतने ही अधिक श्रेष्ठता और महानता की ओर अग्रसर होते हैं। इन मूल्यों और आदर्शों की प्राप्ति अथवा उनकी ओर बढ़ना कठिन हुआ करता है और इसके लिए व्यक्ति को अपनी जड़ता को त्याग कर कर्मठ बनना पड़ता है, अपनी जीवन यात्रा को उर्ध्वगामी बनाना पड़ता है। यह प्रक्रिया सहज और सरल नहीं है और इसीलिए समाज में ऐसे उदाहरणों की आवश्यकता होती है जिनका अनुकरण कर-के सामान्यजन इन आदर्शों और मूल्यों की ओर बढ़ सके। वे व्यक्ति जो अपने असाधारण संकल्प, अध्यवसाय और साधना से इन मूल्यों और आदर्शों को अपने आचरण में चरितार्थ करके समाज को भी ऐसा ही करने की प्रेरणा देते हैं, उन्हें ही समाज महापुरुषों की श्रेणी में रखता है। ऐसे महापुरुषों को समाज अपना प्रेरणास्त्रोत बनाता है, उनके प्रति कृतज्ञता का अनुभव करता है और विभिन्न माध्यमों से उस कृतज्ञता के प्रकटीकरण का भी प्रयत्न करता है। महापुरुषों के दिखाए आदर्शों और मूल्यों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास तो सामान्यजन उनकी प्रेरणा से करते ही हैं, साथ ही वे भौतिक रूप में उन महापुरुषों की स्मृति और उनकी महानता के प्रतीकों को संरक्षित करने का प्रयास भी करते हैं जिससे आने वाली पीढ़ी भी उनके बारे में जानकर उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सके और आदर्शों की ओर बढ़ने वाली उर्ध्वगामी जीवन यात्रा का सातत्य पीढ़ी दर पीढ़ी बना रह सके। महापुरुषों की मूर्तियां, छतरियां, देवलियां, उनकी कर्मस्थली रहे दुर्ग, युद्धस्थल, बलिदान स्थल आदि इसी प्रकार के भौतिक प्रतीक हैं जो उन महापुरुषों और उनके दिखाए आदर्शों की स्मृति को जीवित रखते हैं और इसीलिए वे समाज के लिए प्रेरणा के स्थायी केंद्रों के रूप में महत्व रखते हैं। इन प्रेरणा केंद्रों के निरंतर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरण की प्रक्रिया में ही समाज और राष्ट्र का प्रेरणादायी इतिहास भी निर्मित हुआ करता है। हमारे समाज में जनमानस को आदर्श की राह दिखाने वाले, मातृभूमि और प्रजा की रक्षा में अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले ऐसे महापुरुषों और जननायकों की एक लंबी श्रृंखला रही है और इसीलिए हमारे समाज का इतिहास भी सर्वाधिक समृद्ध, गौरवशाली और प्रेरणास्पद रहा है, इतना कि इस देश के चप्पे-चप्पे पर हमारे पूर्वजों की गौरवगाथाएं ऐतिहासिक स्थलों के रूप में अंकित रही हैं।

किंतु आज इन प्रेरणा केंद्र रूपी ऐतिहासिक स्थलों की क्या स्थिति है, उन महान पूर्वजों के वंशजों के रूप में यह हमारे लिए चिंतनीय होना चाहिए। हमारी ऐतिहासिक धरोहरों की वर्तमान स्थिति पर यदि हम दृष्टिपात करेंगे तो पाएंगे कि ये धरोहरें घोर उपेक्षा की पात्र बनी हुई हैं। संरक्षण और सार-संभाल के अभाव में हमारे पूर्वजों की पावन स्मृतियों और प्रेरणा को संजोए रखने वाली ये धरोहरें क्षरण, गंदगी और अतिक्रमण की शिकार होकर नष्ट होती जा रही हैं। जो स्थल समाज की प्रेरणा के केंद्र हों, उनकी ऐसी दुर्गति हमारी संवेदना, कृतज्ञता और गंभीरता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। हम सभी प्रायः हमारे इतिहास की चोरी और विकृतिकरण पर आक्रोश व्यक्त करते हैं, जो किया भी जाना चाहिए, लेकिन हम स्वयं अपने इतिहास और उसके मूर्त प्रतीकों के संरक्षण के प्रति कितने गंभीर हैं, इस पर भी हमें चिंतन अवश्य करना चाहिए। यदि हमारी बहुमूल्य संपत्ति की सार-संभाल और रक्षा हम नहीं करेंगे तो अन्य लोग उस उपेक्षित संपदा पर कब्जा जमाने से चुकेंगे नहीं। हम अपने इतिहास पर गर्व तो बहुत अधिक करते हैं लेकिन क्या हम उस इतिहास से प्रेरणा प्राप्त करने का भी प्रयत्न करते हैं? इतिहास केवल गर्व का विषय नहीं होता बल्कि उसकी वास्तविक उपयोगिता उससे प्रेरणा और शिक्षा लेने में है। अपने इतिहास से हम प्रेरणा तभी ले सकेंगे जब हम उस इतिहास को संजोए हुए ऐतिहासिक स्थलों और धरोहरों पर जाएंगे, वहां हमारे पूर्वजों द्वारा अंकित इतिहास को जानेंगे, उनके संघर्षों और बलिदानों के प्रति कृतज्ञता का अनुभव करेंगे और उनके द्वारा स्थापित आदर्शों और मूल्यों को अपने जीवन में उतारने के दायित्व का बोध करेंगे। यदि हम अपनी ऐतिहासिक धरोहरों और अपने इतिहास को इस प्रकार से व्यावहारिक महत्व देना प्रारंभ कर देंगे, उसके संरक्षण के लिए सक्रिय हो जाएंगे तो न केवल हमारे इतिहास की चोरी और विकृतिकरण के प्रयासों पर अंकुश लगेगा बल्कि कुंठित एवं स्वार्थी तत्वों द्वारा हमारे समाज के प्रति किए जाने वाले दुष्प्रचार को भी हमारे उज्ज्वल इतिहास के प्रकटीकरण के माध्यम से निष्प्रभावी किया जा सकेगा।

लेकिन समस्या यही है कि हम हमारे इतिहास को जितना शाब्दिक महत्व देते हैं उतना व्यावहारिक महत्व नहीं देते। हम जितना इतिहास पर गर्व करते हैं, उतनी उससे प्रेरणा नहीं लेते। हम इतिहास चोरी आदि पर जितना आक्रोशित होते हैं उतना अपनी ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण के लिए सक्रिय नहीं होते। यदि हम ऐसा करना प्रारंभ कर दें तो हमारे ऐतिहासिक स्थल उपेक्षित खंडहरों में बदलने की अपेक्षा पुनः प्रेरणा केंद्रों के रूप में जीवित हो उठेंगे। यह अत्यंत आवश्यक भी है क्योंकि जिस समाज की प्रेरणा के स्त्रोत कुंद हो जाते हैं वह समाज प्रगति पथ पर गतिमान नहीं रह पाता और जड़गामी बन जाता है। इसलिए समाज जागरण के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग समाज में इतिहास के बोध और उससे जागृत प्रेरणा को बनाए रखना भी है। कई बार यह तर्क भी दिया जाता है कि इन ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण के लिए सरकारी प्रयासों अथवा अत्यधिक धन और संसाधनों की आवश्यकता है किंतु धरातलीय अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि प्राथमिक समस्या धनाभाव अथवा सरकारी व प्रशासनिक उपेक्षा की नहीं है बल्कि हमारी स्वयं की सक्रियता के अभाव की है। वास्तविकता यह है कि समाज और लोकमानस जिन स्थलों को अपनी प्रेरणा के केंद्र मानकर उन्हें महत्व देना प्रारंभ कर देता है उन्हें अन्य पक्षों से भी स्वतः ही महत्व मिलना प्रारंभ हो जाता है और तब धन अथवा प्रशासनिक सहयोग आदि की भी कमी नहीं रहती। इसीलिए सर्वप्रथम आवश्यकता यही है कि हम स्वयं अपने इतिहास, अपने पूर्वजों की स्मृति और अपनी ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति अपने दायित्व को अनुभव करें और उस दायित्व के निर्वहन के लिए कर्मशील बनें।

कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष में निबंध प्रतियोगिता

श्री क्षत्रिय युवक संघ के अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत द्वारा श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन साणंद स्थित वाघेला बोर्डिंग में 26 अगस्त को किया गया जिसमें समाज के 105 विद्यार्थियों ने भाग लिया। अर्जुन सिंह काणेटी ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। मां भगवती छात्रावास शाखा गढ़ सिवाना में भी कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में मटकी फोड़ कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(पृष्ठ एक का शेष)

हरसाणी के...

नखत सिंह 2010 में भारतीय सेना में सिपाही के पद पर भर्ती हुए थे तथा वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश में 19 ग्रेनेडियर्स में हवलदार के पद पर तैनात थे। 27 अगस्त को सेना के 'ऑपरेशन अलर्ट' में भाग लेते समय एक वाहन दुर्घटना में नखत सिंह सहित तीन सैनिक शहीद हो गए थे। 34 वर्षीय नखत सिंह के परिवार में उनकी पत्नी एवं एक बेटा व एक बेटी है।

शाखाओं में हर्षोल्लास से मनाया रक्षाबंधन का त्यौहार

19 अगस्त को श्री क्षत्रिय युवक संघ की जयपुर में शेखावटी नगर, सीकर रोड शाखा में रक्षाबंधन मनाया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि रक्षाबंधन का पर्व अपनों की रक्षा के लिए सन्नद्ध होने की प्रेरणा देने वाला पर्व है। हमारे समाज पर भी आज अनेक दिशाओं से आक्रमण हो रहे हैं उनसे समाज की रक्षा का दायित्व हमको ही निभाना है। कार्यक्रम का संचालन जयपुर शहर प्रांत प्रमुख श्याम सिंह चिरनोटिया के द्वारा किया गया। हैदराबाद में राष्ट्रवीर दुर्गादास शाखा में स्वयंसेवकों ने एक दूसरे को रक्षासूत्र बांध कर रक्षाबंधन पर्व मनाया। कार्यक्रम का संचालन गोपालसिंह भियाड़ ने किया। जैसलमेर संभाग के रामगढ़ प्रांत में भोजराज की ढाणी शाखा में भी रक्षाबंधन मनाया गया। अहमदाबाद जिले के धोलेरा गांव में भी चूड़ासमा राजपूत समाज द्वारा रक्षाबंधन का पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया जिसमें पूरे गांव की बेटियों ने सामूहिक रूप से त्यौहार मनाया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के गोहिलवाड़ संभाग प्रमुख प्रवीण सिंह धोलेरा भी कार्यक्रम में सहयोगियों सहित शामिल रहे। सीकर के नाथावतपुरा में स्थित मीरा गर्ल्स सेकेंडरी स्कूल में रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में 'राखी बनाओ एवं थाली सजाओ' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। चेयरमैन भंवर सिंह नाथावत ने बालिकाओं को रक्षाबंधन का महत्त्व समझाया। इसके अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर दुर्गादास जयंती के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाया गया।

भवानी सिंह जाखल और अजय सिंह राठौड़ बने अतिरिक्त मुख्य अभियंता

जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग राजस्थान में अधीक्षण अभियंता के रूप में कार्यरत संघ के स्वयंसेवक भवानी सिंह जाखल व अजय सिंह धीरासर को हाल ही में हुई विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक में अतिरिक्त मुख्य अभियंता के रूप में पदोन्नत किया गया है। नव पदोन्नत दोनों ही अधिकारी सामाजिक भाव के साथ सदैव सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	07.09.2024 10.09.2024	खानपुर (नागौर)।
02.	प्रा.प्र.शि.	12.09.2024 से 15.09.2024 तक	श्री हनुमान जी की बगीची बाला, तह. आहोर,जिला-जालौर, (बिशनगढ़ एवं भाद्राजून से बसों की सुविधा है।) **संपर्क सूत्र -** बृजपाल सिंह बाला - 8094092013, राजेंद्र सिंह भवराणी - 9413123738
03.	प्रा.प्र.शि.	12.09.2024 से 15.09.2024 तक	श्री लोलेश्वर महादेव मंदिर दासपा, तहसील- भीनमाल, जिला जालौर, (भीनमाल बागोडा व सायला से बसों की सुविधा है।)
04.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	श्री राम बल्लू जी राजपूत छात्रावास सांचौर **संपर्क सूत्र-** सरूप सिंह केरिया - 9549652662, प्रेम सिंह अचलपुर - 9828099602
05.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	जोधासर, श्री डूंगरगढ़, (जयपुर-बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग - 11 पर स्थित है) **संपर्क सूत्र-**9001772703, 9783781111
06.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	मोरखाणा, नोखा, (नोखा व बीकानेर से बसें उपलब्ध हैं) **संपर्क सूत्र-**भंवर सिंह मोरखाणा - 9928514502
07.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	बादरे जी की ढाणी, वांकलपुरा, महाबार (बाड़मेर से नोखड़ा सड़क मार्ग पर स्थित)
08.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	मेदुसर, गडरारोड, बाड़मेर
09.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	गौड़ा, सेड़वा, जिला - बाड़मेर
10.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	वीर कांधल जी मंदिर साहवा (प्रांत - चूरू)।
11.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	रामपुरा बेरी, राजगढ़, चुरू (प्रांत - हिसार)।
12.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	झेरली, झुंझुनूं (प्रांत - शेखावाटी)।
13.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	मां भारती महाविद्यालय कुशलगढ़, जिला - बांसवाड़ा। **संपर्क सूत्र:** श्री करणी सिंह कुशलगढ़ - 9414101867
14.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 16.09.2024	खोखसर, तह. गिड़ा। जिला-बालोतरा। बायतु व बालोतरा से वाया परेऊ होते हुए खोखासर के लिए बस उपलब्ध। **सम्पर्क:** कानसिंह-6350335541 आईदानसिंह9784366457
15.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	पिथोरा गार्डन, जोधपुर
16.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	मोटाई, जिला-फलोदी।
17.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	कुड़ तहसील-भोपालगढ़।
18.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	महारानी पब्लिक स्कूल, दांतिल रोड, खड़ब, नारेहेड़ा पाटन। अजीतगढ़ से नारेहेड़ा के साधन उपलब्ध है।
19.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	हरियासर (जैसलमेर)
20.	प्रा.प्र.शि.	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	भोपा (जैसलमेर)
21.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.09.2024 से 16.09.2024 तक	गंगरार (चित्तौड़गढ़)।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.06.2024 से 16.09.2024 तक	गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)।
23.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.09.2024 से 17.09.2024 तक	बापा सीताराम फार्महाउस, गोपीनाथ लाइटहाउस के पास, गोपनाथ, तहसील - तलाजा, जिला - भावनगर
24.	प्रा.प्र.शि.	14.09.2024 से 16.09.2024 तक	तावी, तहसील - लखतर, जिला - सुरेंद्रनगर (गुजरात) **संपर्क सूत्र -** 9825403101
25.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.09.2024 से 16.09.2024 तक	काणेटी, तहसील - साणंद, जिला- अहमदाबाद (गुजरात) **संपर्क सूत्र -** 8140312421
26.	प्रा.प्र.शि.	14.09.2024 से 17.09.2024 तक	मेमदपुर, तहसील- वडगाम, जिला-बनासकांठा (गुजरात)
27.	प्रा.प्र.शि.	14.09.2024 से 17.09.2024 तक	भेंसाणा, तहसील - मेहसाणा, जिला - मेहसाणा (गुजरात)
28.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.09.2024 से 17.09.2024 तक	कामली, तहसील - ऊंझा, जिला - मेहसाणा (गुजरात)

गजेन्द्र सिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

हरि सिंह चंपावत ने इटली से प्राप्त की स्नातकोत्तर की उपाधि

पोकरण क्षेत्र के विरमदेवरा गांव के निवासी हरि सिंह चंपावत ने इटली के बोलोन्या विश्वविद्यालय से मानवाधिकार और अंतरसांस्कृतिक विरासत पर अंतरराष्ट्रीय सहयोग में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। उनके शोध प्रबंध (मास्टर थीसिस) का विषय 'भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी और आरक्षण विधेयकों का ऐतिहासिक विश्लेषण' रहा।

महिपाल सिंह बरवाली वायु सेना पदक से सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा नागौर जिले के बरवाली गांव के निवासी महिपाल सिंह पुत्र राजेन्द्र सिंह को वायु सेना पदक से सम्मानित किया गया है। भारतीय वायुसेना में स्क्वाड्रन लीडर के पद पर नियुक्त महिपाल सिंह को यह सम्मान 4 जनवरी को एक प्रशिक्षण उड़ान के दौरान विमान में तकनीकी खराबी आ जाने पर दिखाए गए असाधारण साहस एवं कौशल के लिए प्रदान किया गया।

सच्चे अर्थों में राष्ट्रनायक है दुर्गादास राठौड़: संघप्रमुख श्री

डीडवाना

(पेज एक से लगातार) श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। राष्ट्रनायक दुर्गादास जी की जयंती आंग्ल पंचांग के अनुसार 13 अगस्त को एवं भारतीय पंचांग के अनुसार श्रावण शुक्ला चतुर्दशी (18 अगस्त) को देशभर में विभिन्न स्थानों पर उत्साह पूर्वक मनाई गई। बीकानेर संभाग के श्रीडूंगरगढ़ में दुर्गादास राठौड़ जयंती 13 अगस्त को श्री रघुकुल राजपूत छात्रावास प्रांगण में मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सैनिक कल्याण बोर्ड अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजौर ने कहा कि दुर्गादास जी की भांति समाज, धर्म व राष्ट्र के लिए त्याग, बलिदान व सेवा देने वाला प्रत्येक व्यक्ति पूजनीय बन सकता है। विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष रामगोपाल सुथार ने वीर दुर्गादास के संपूर्ण जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने एवं युवा पीढ़ी से नशे से दूर रहने का आह्वान किया। स्थानीय विधायक ताराचंद सारस्वत ने दुर्गादास राठौड़ के जीवन मूल्यों को अपने जीवन में उतारने की बात कही व श्री क्षत्रिय युवक संघ के सात्विक कार्यों की सराहना की। राजस्थानी साहित्यकार गिरधरदान रतनू 'दासोड़ी' ने डिंगल कृत दोहों व कविता के माध्यम से दुर्गादास राठौड़ के चरित्र का वर्णन किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मातृशक्ति विभाग प्रभारी जोरावर सिंह भादला ने दुर्गादास जी के जीवन की विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया और उनके संपूर्ण जीवन को गीता द्वारा वर्णित क्षत्रिय की परिभाषा के अनुरूप बताया। वरिष्ठ स्वयंसेवक भरतसिंह सेरूणा ने संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में बताया। पूर्व प्रधान छैलूसिंह पुन्दलसर ने सभी का आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने किया। अजमेर जिले की भिणाय तहसील के कल्याणपुरा ग्राम में स्थित बनी वाली माताजी मंदिर प्रांगण में राष्ट्रनायक दुर्गादास राठौड़ एवं राव चंद्रसेन की जयंती संयुक्त रूप से समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें अजमेर केकड़ी भीलवाड़ा उदयपुर जिलों के समाजबंधु सम्मिलित हुए। विधायक वीरेंद्र सिंह कानावत व शत्रुघ्न गौतम, पूर्व विधायक रणधीर सिंह भिंडर, श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा, राव हरेंद्र सिंह बांदनवाड़ा, भंवर सिंह पलाड़ा, शिवानी कंवर, जितेंद्र सिंह बड़वा आदि वक्ताओं ने कार्यक्रम को संबोधित किया एवं दोनों महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने एवं उनके आदर्शों को आत्मसात करने की बात कही गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां ने कार्यक्रम का संचालन किया। अराईं में भी राजपूत सभा अराईं के तत्वाधान में दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई। हरियाणा में हिसार के तलवंडी रुक्का में भी राष्ट्रनायक वीर दुर्गादास राठौड़ की जयंती मनाई गई

चौहटन

जिसमें तलवंडी रुक्का, तलवंडी बादशाहपुर, चारनौंद और चिड़ोद गांवों के निवासी सम्मिलित हुए और राष्ट्रनायक को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के हिसार प्रांत प्रमुख अरविन्द सिंह बालवा ने दुर्गादास जी की जीवनी के बारे में बताया और कहा कि दुर्गादास जी हमारे राष्ट्रनायक हैं और उनका पूरा जीवन ऐसा आदर्श जीवन है जो हमें जीवन के हर क्षेत्र में प्रेरणा देता है। दुर्गादास जी का जीवन हममें दायित्व बोध जगाता है। तेजपाल सिंह चूंडावत ने श्री क्षत्रिय युवक संघ और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में बताया। महेन्द्रसिंह चारणोद, कानसिंह तलवंडी, वीरेन्द्रसिंह चारणोद, धर्मेन्द्रसिंह तलवंडी, हरिसिंह मीठड़ी आदि ने भी संबोधित किया। पाली प्रांत के खिवांदी गांव में श्री करणी बालिका शाखा द्वारा दुर्गादास जयंती समारोह का आयोजन गांव में स्थित श्री सुभद्रा माताजी मंदिर में किया गया। दिग्विजय सिंह कोलीवाड़ा ने कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ यह वर्ष शाखा वर्ष के रूप में मना रहा है, उसी के तहत विभिन्न शाखाओं में दुर्गादास जी की जयंती मनाई जा रही है। रश्मि कंवर देलदरी ने

करोली

बालिकाओं के लिए संघ शिक्षण के महत्व को बताया। जालौर संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने वीर दुर्गादास राठौड़ का जीवन वृतांत बताते हुए कहा कि वे क्षत्रियत्व के आदर्श प्रतिरूप हैं जिनसे हम सभी प्रेरणा ले सकते हैं। कार्यक्रम में पप्पू सिंह खिवांदी, प्रताप सिंह बिठिया, परबत सिंह कानपुरा, रंजन कंवर, ऋतु कंवर, निकिता कंवर, अंजू कंवर, सुमन कंवर आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन पाली प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाना ने किया। पाली में इंद्रा कॉलोनी स्थित वीर दुर्गादास राजपुत छात्रावास में भी जयन्ती मनाई गई जिसमें दुर्गादास शिक्षा समिति के सचिव राजेंद्र सिंह डिंगाई ने दुर्गादास के संक्षिप्त जीवन परिचय के बारे में बताया। छात्रावास अधीक्षक जवान सिंह मानी, छात्र कुलदीप सिंह व दिलीपसिंह ने भी अपने विचार रखे। पाली प्रांत के सोजत मंडल में गुड़ा कलां में भी बालिका शाखा द्वारा जयंती मनाई गई जिसमें बहादुर

दिल्ली

सिंह सारंगवास ने दुर्गादास जी के जीवन से प्रेरणा लेकर क्षात्रधर्म का पालन करने की बात कही। सोजत में राजपूत छात्रावास निमली नाड़ी शाखा में भी जयंती मनाई गई। नागौर के श्री अमर छात्रावास में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नागौर प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ गीता के मार्ग पर चलते हुए दुर्गादास जी की ही भांति सच्चे क्षत्रिय तैयार करने का अभ्यास करवा रहा है। कार्यक्रम का संचालन जब्बर सिंह दौलतपुरा ने किया। खींवसर स्थित दुर्गादास छात्रावास में भी जयंती मनाई गई। खींवसर प्रांत में सारुण्डा स्थित करणी क्लब ग्राउंड में भी जयंती मनाई गई। जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत के भुंगरा स्थित प्रेम सागर में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। शेरगढ़ के ब्लॉक शिक्षा अधिकारी वीरेंद्र सिंह शेखावत ने दुर्गादास जी के जीवन को त्याग एवं समर्पण का पर्याय बताया। देवी सिंह भुंगरा ने दुर्गादास जी का विस्तृत जीवन परिचय दिया एवं खेत सिंह खिरजा ने दुर्गादास जी के जीवन का अनुकरण करने की बात कही। स्वरूप सिंह खारी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा व शिविर को अपने जीवन का नियमित अंग बनाने की बात कही। पादरू के निकटवर्ती कांखी ग्राम स्थित महादेव मंदिर परिसर में भी दुर्गादास जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। बडोड़ागांव स्थित देगराय पब्लिक उच्च प्राथमिक विद्यालय में भी जयंती मनाई गई जिसमें उम्मेद सिंह बडोड़ागांव द्वारा पूज्य तनसिंह जय रचित 'क्षिप्रा के तीर' प्रकरण का पठन किया गया। विद्यालय संचालक चतुर सिंह ने दुर्गादास का जीवन परिचय दिया। बाड़मेर स्थित श्री बाहड़राव राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई। बाड़मेर में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मालगोदाम रोड, वीर दुर्गादास मार्ग में दुर्गादास जयंती मनाई गई। दुर्गादास जी के जीवन चरित्र पर लघु प्रश्नोत्तरी का आयोजन भी किया गया। मंच संचालन प्रेम सिंह लूणू ने किया। बाड़मेर स्थित द सक्सेस हॉस्टल में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें बाड़मेर शहर प्रांत प्रमुख छगन सिंह लूणु ने दुर्गादास जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने की बात कही। श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस चौहटन में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक उदय सिंह देदूसर ने दुर्गादास जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। शिव प्रांत के भियाड़ में भी दुर्गादास जी की जयंती शाखा स्तर पर मनाई गई जिसमें शिव प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भियाड़ सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। सीकर स्थित श्री कल्याण छात्रावास में आयोजित जयंती कार्यक्रम में जयपाल सिंह तारपुरा ने दुर्गादास जी के जीवन के बारे में जानकारी दी। नवरंग सिंह चिराना ने 'क्षिप्रा के तीर' का पठन किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने दुर्गादास जी के चरित्र को आत्मसात करने हेतु संघ की शाखा में नियमित आने की बात कही। वीर दुर्गादास छात्रावास बालोतरा में भी जयंती मनाई गई जिसमें छात्रावास के संरक्षक चंदनसिंह चांदेसरा ने

खिवांदी

दुर्गादास जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताया। राणसिंह टापरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। बांसवाड़ा के गनोड़ा में स्थित बिहारी वाटिका में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। आकोड़ा में दुर्गादास शाखा व पद्मिनी बालिका शाखा में भी जयंती मनाई गई। उदयपुर में बीएन महाविद्यालय में भी जयंती मनाई गई। बायतु प्रांत में चांदेसरा गांव में श्री हमीर जी बापजी के स्थान पर जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। हैदराबाद में स्थित संजीवैया पार्क में 15 अगस्त को श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा वीर दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई। तत्पश्चात राम सिंह चारणीम, गोपालसिंह भियाड़, नैन सिंह सवराटा, कालुसिंह सुराणा आदि ने वीर दुर्गादास जी राठौड़ के जीवन चरित्र के बारे में बताया एवं उनसे प्रेरणा लेकर क्षात्रधर्म का पालन करने की बात कही। मुंबई में चौपाटी के जैसल पार्क में 11 अगस्त को श्री मल्लीनाथ शाखा द्वारा जयंती मनाई गई। मुंबई के मलाड क्षेत्र में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। जैसलमेर जिले के रामगढ़ में स्थित श्री राजपूत छात्रावास में, चुरू जिले के रतनगढ़ क्षेत्र के नुवाँ गांव में तथा मां भगवती छात्रवास गढ़ सिवाना में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। नटवाड़ा कस्बे में स्थित वीर दुर्गादास सर्कल पर वीर दुर्गादास स्मृति संग्रहालय एवं भाजपा नटवाड़ा मंडल के तत्वाधान में दुर्गादास जयंती मनाई गई। 18 अगस्त को वीर दुर्गादास जी की जयंती करौली स्थित श्री गोपाल राजपूत छात्रावास के प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाई गई। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि दुर्गादास जी का चरित्र एक सच्चे राष्ट्रनायक का चरित्र है। उनका व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च गुणों को धारण करता है। शत्रु की संतान को भी प्रेम और सम्मान के साथ रखना, किसी भी प्रकार के प्रतिफल की कामना किए बिना अपने कर्तव्य के पालन के लिए जीवन भर संघर्षरत रहना, औरंगजेब जैसे चालाक प्रतिद्वंदी को अपनी कूटनीति से विवश कर देना, प्रबल शत्रु के विरुद्ध संगठित शक्ति के निर्माण के लिए प्रयत्न करना, राज्य को अंतर्कलह से बचाने के लिए निर्वासन तक को भी स्वीकार कर लेना आदि दुर्गादास जी के ऐसे गुण है जिनके कारण वे मध्यकालीन इतिहास में राष्ट्र के सच्चे नायक के रूप में उभर कर आते हैं। पूर्व विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा ने युवाओं से संगठित रहने की बात कही और सभी समाजों के लोगों को साथ लेकर चलने की आवश्यकता जताई। पूर्व विधायक रोहिणी कुमारी ने कहा कि समाज के युवाओं को वर्तमान परिस्थितियों में मजबूत होकर समाज की उन्नति में सहयोग करना

मलाड़

होगा। श्री राजपूत समाज के जिलाध्यक्ष अजय सिंह ने समाज की एकता को सुदृढ़ करने के लिए कार्य करने का आह्वान किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी के जीवन के बारे में बताया और संघ की स्थापना क्यों और कैसे हुई, इसे स्पष्ट किया। करौली-धौलपुर से भाजपा लोकसभा प्रत्याशी इंदु देवी जाटव भी कार्यक्रम में शामिल हुई। करौली प्रांत प्रमुख महादेव सिंह दांतली और पद्मिनी राठौड़ ने आयोजन व्यवस्था में सहयोग किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक राजेंद्र सिंह बोबासर सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में रविवारीय शाखा में दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई जिसमें माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर, माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने अन्य स्वयंसेवकों के साथ दुर्गादास जी को पुष्पांजलि अर्पित की। माननीय महावीर सिंह जी ने दुर्गादास जी के चरित्र में गीता में वर्णित क्षत्रियों के सातों गुणों - शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, संघर्षप्रियता, दान और ईश्वरीय भाव की उपस्थिति की व्याख्या की। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(पृष्ठ छह का शेष) **सच्चे अर्थों...**नई दिल्ली में टोडरमल रोड़ स्थित एनडीएमसी कम्युनिटी सेंटर में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने बताया कि मध्यकालीन इतिहास में दुगार्दास एकमात्र ऐसे उदाहरण है जो सामान्य सिपाही होकर भी बिना किसी निजी हित के केवल अपने राज्य और लोगों के प्रति दायित्व को समझकर आजीवन संघर्षरत रहे। उनके विराट व्यक्तिव में त्याग, शौर्य और स्वामिभक्ति की भावना अतुलनीय है। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकर सिंह महरौली ने कहा कि संघ द्वारा बताई गई कर्त्तव्यपालन की राह अंततः ईश्वर प्राप्ति का ही मार्ग है। कार्यक्रम में दिल्ली में निवासरत व्यवसायी, डीयू, जेएनयू के छात्रों समेत अन्य समाजबंधु शामिल हुए। कार्यक्रम से पूर्व पुरानी दिल्ली स्थित आजाद मार्केट में स्थित दुर्गा बाबा की मूर्ति पर श्री नारायण शाखा शास्त्री नगर एवं सम्राट अशोक शाखा के स्वयंसेवकों ने मिलकर मूर्ति स्थल की सफाई करके पुष्पांजलि अर्पित की। सभी ने पुरानी दिल्ली में स्थित रूप सिंह जी की हवेली का भी भ्रमण किया जहां पर महाराजा जसवंत सिंह जी की दोनों रानियां एवं अजीत सिंह जी को रखा गया था और जहां मोकम सिंह जी बालुदा, रघुनाथ सिंह जी भाटी लवेरा और महेशदास जी जोधा ने मुगलो से युद्ध लड़ा एवं मुकुनदास जी खींची सपेरे के भेष में मुगलों की टुकड़ी के चंगुल से अजीत सिंह को लेकर निकले। भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट के तत्वावधान में वीर दुगार्दास राठौड़ की जयंती मल्लीनाथ छात्रावास स्टेशन रोड बाड़मेर में हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। कमल सिंह चूली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वीर दुगार्दास राठौड़ कर्तव्य परायणता एवं स्वामी भक्ति के उत्कृष्ट उदाहरण हैं जिनसे प्रेरणा लेकर नवयुवकों को अपने जीवन चरित्र का निर्माण करना चाहिए। दुगार्दास जी स्वार्थ से परमार्थ की ओर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। चौहटन में दुर्गा महिला शिक्षण संस्थान के प्रांगण में दुगार्दास जी की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम के दौरान बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए दुगार्दास महिला छात्रावास के निर्माण हेतु समाजबंधुओ द्वारा डेढ़ करोड़ रुपए का सहयोग भी जुटाया गया। पोकरण प्रांत के भैंसड़ा गांव में स्थित कृष्ण मंदिर में भी दुगार्दास जी की जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया एवं प्रांत प्रमुख नरपत सिंह राजगढ़ सहयोगी सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। रामगढ़ प्रांत में भोजराज की ढाणी में भी जयंती मनाई गई। दक्षिण गुजरात सम्भाग में सूरत में भी दुगार्दास जयंती और रक्षाबंधन का कार्यक्रम सामूहिक शाखा के रूप में मनाया गया। दिलीपसिंह, मांगूसिंह चांदेसरा, चैनसिंह सिराणा, बाबुसिंह रेवाड़ा ने अपने विचार रखे। मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद प्रांत में श्री रामजी मंदिर, काणेटी गांव में वीर दुगार्दास राठौड़ की जयंती और जनेऊ धारण (रक्षाबंधन) कार्यक्रम 19 अगस्त को आयोजित हुआ। गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर प्रांत में तक्षशिला शाखा में भी जयंती मनाई गई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। संभाग के मोरचंद प्रांत के अवाणियां गांव में भी यज्ञोपवीत कार्यक्रम और दुगार्दास जी जयंती का आयोजन हुआ जिसमें भावनगर शहर, मोरचंद, खडसलिया, थलसर और अवाणियां के स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। पालनपुर प्रांत में मेनपुर तहसील के वडगाम और पाटण प्रांत में कुणघेर में जयंती मनाई गई। चितौड़गढ़ प्रांत के बेगूं मंडल के गोपालपुरा (बस्सी) बालाजी मंदिर परिसर में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। नरेंद्र सिंह नरधारी ने वीर दुगार्दास के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने कहा कि अन्याय का प्रतिकार करना क्षत्रिय का मुख्य कर्त्तव्य है। दुगार्दास जी ने अपना यह कर्त्तव्य जीवन भर निभाया। वे मध्यकालीन इतिहास के आदर्श पात्र हैं। कार्यक्रम का संचालन करते हुए जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया। पुणे प्रांत द्वारा राष्ट्रनायक दुगार्दास जी की जयंती श्री अक्कलकोट स्वामी समर्थ मंदिर (गणेश पैठ) में मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्य प्रणाली के बारे में बताते हुए शाखा एवं शिविर में नियमित रूप से आने की बात कही। रणजीत सिंह आलासन, पवन सिंह बिखरनिया, योगेंद्र सिंह फुंगणी ने भी अपने विचार रखे। पुणे प्रांत प्रमुख रघुनाथ सिंह बैण्याकाबास ने कार्यक्रम का संचालन किया। मुंबई में भायंदर की नारायण शाखा में दुगार्दास जयंती एवं रक्षाबंधन कार्यक्रम संयुक्त रूप से मनाया गया। मुंबई की बहाड़ राव परमार शाखा में भी दुगार्दास जयंती एवं रक्षाबंधन मनाया गया। वीरमदेव शाखा भिवंडी में भी जयंती मनाई गई। जयपुर में 21 नंबर बस, स्टैंड सिरसी रोड पर महाराव शेखा शाखा में जयंती मनाई गई जिसमें जयपुर शहर प्रांत प्रमुख श्याम सिंह जी चिरनोटिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पूर्वी राजस्थान संभाग के दौसा प्रान्त के रानियावास में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया ने दुगार्दास जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। डूंगरपुर प्रांत के आसपुर गांव में एवं बिरामी (सुमेरपुर) में भी जयंती मनाई गई।

(पृष्ठ दो का शेष) **क्षात्रशक्ति...**कार्यक्रम में सामूहिक यज्ञ किया गया एवं एक दूसरे को रक्षा सूत्र बांधकर रक्षाबंधन का पर्व भी मनाया गया। उत्तर गुजरात संभाग के पाटन प्रांत के सांतलपुर गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में आयोजित हुआ। इंद्रजीत सिंह जैतलवासना ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविर के विदाई कार्यक्रम में शिविरार्थियों से कहा कि यहां चार दिन सतयुग जैसे वातावरण में रहकर हम पुनः कलयुगी वातावरण में जा रहे हैं। उस वातावरण का प्रभाव हम पर ना पड़े इसके लिए संघ से निरंतर संपर्क बनाए रखें। शिविर में मोटीचंदुर, पर, शंखेश्वर,भीलोट कच्छ, दीयोदर छात्रावास, सांतलपुर आदि स्थानों के 104 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान दुगार्दास जयंती एवं रक्षाबंधन का पर्व भी मनाया गया। केंद्रीय कार्यकारी दीवान सिंह काणेटी एवं संभाग प्रमुख वनराज सिंह भैंसाणा भी एक दिन के लिए शिविर में उपस्थित रहे। धर्मेंद्र सिंह मोटीचंदुर और वाघुभा सांतलपुर ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इनके अतिरिक्त 24 से 28 अगस्त की अवधि में भी 15 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित हुए हैं जिनके **समाचार अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।**

वीर दुगार्दास राठौड़ की कर्म स्थली रही है: सिरोही धरा

विक्रम संवत अनुसार श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को वीर दुगार्दास राठौड़ का जन्म दिवस मनाया जाता है। इतिहासकार पंडित विश्वेश्वर रेऊ के अनुसार सन् 1678 ईस्वी में काबुल जीत के समय महाराजा जसवंतसिंह जोधपुर की वीरगति हो जाने के उपरांत उनके दोनों राजकुमारों को बादशाह औरंगजेब ने कैद करवा लिया था। विषम परिस्थितियों में कूटनीतिपूर्वक वीर शिरोमणि दुगार्दास राठौड़ एवं मुकुंद दास खींची आदि राजकुमार अजीतसिंह को दिल्ली से लेकर निकले एवं भयंकर जंगलों में होते हुए उनके ननिहाल सिरोही के शासक महाराव वेरीसाल देवड़ा प्रथम के पास पहुंचे। सिरोही के शासक महाराव वेरीसाल प्रथम ने अपूर्व साहस का उदाहरण प्रस्तुत कर मुगल सत्ता को चुनौती देने का बीड़ा उठाया एवं अपने सान्निध्य में राजकुमार अजीतसिंह को भगवान भुवनेश्वर के चरणों में डोडुआ ग्राम में रखा। उन्होने अपनी देख रेख में ठाकुर साहब कालंद्री को यह महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपकर सिरोही क्षेत्र के कालंदरी, डोड़आ, पालड़ी, मामावली समेत रियासत के विभिन्न क्षेत्रों में गुप्त रूप से रखा। उल्लेखनीय है कि सिरोही नन्हे राजकुमार अजीतसिंह का ननिहाल होने से उनके लालन-पालन एवं सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त स्थान था। ऐसा कहा जाता है कि यहीं पर रहते हुए सन् 1687 ईस्वी में प्रथम बार राजकुमार अजीतसिंह को जोधपुर नरेश घोषित किया गया था। उधर बादशाह औरंगजेब को राजकुमार अजीतसिंह के सिरोही में होने की भनक लग चुकी थी। उसके बावजूद सिरोही नरेश ने अपने सामंतों की सहायता से अजीतसिंह को सुरक्षित रखने में सहयोग किया। सिरोही रियासत में विभिन्न स्थानों पर जगह बदलकर रखे जाकर नन्हे अजीतसिंह का लालन पालन कर बड़ा किया गया था। दुर्गम क्षेत्र में दुगार्दास राठौड़ घोड़े पर रहकर संघर्षरत रहे एवं राजकुमार अजीतसिंह की रक्षा में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

अंत में राजकुमार अजीतसिंह को जोधपुर का स्वामी बनाकर कर्तव्य पूरा किया। मातृभूमि के लाडले वीर शिरोमणि स्वामीभक्त दुगार्दास राठौड़ को शत-शत नमन।।

डॉ उदय सिंह डिंगार,
प्रांत उपाध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति मरूप्रांत।

मारवाड़ के यशस्वी सपूतः सर प्रताप सिंह

राठौड़ वंश के उतराधिकारियों ने केवल जोधपुर ही नहीं अपितु बीकानेर, ईडर, किशनगढ़, रतलाम, मांडा, अलिराजपुरा, झाबुआ, सैलाना आदि में राठौड़ शासन स्थापित किया था। अतः मारवाड़ का राठौड़ वंश राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश तक विस्तारित है। ईडर राजघराने के महाराजा तखत सिंह के पुत्र थे- सर प्रताप सिंह। प्रताप सिंह का जन्म विक्रम संवत 1902 कार्तिक बदी षष्ठी तदनुसार 21 अक्टूबर1845 ई., मंगलवार को हुआ था। महाराजा तखत सिंह के तीन संताने थी- जसवंत सिंह, जोरावर सिंह व सबसे छोटे पुत्र प्रताप सिंह। महाराजा प्रताप सिंह एक निडर व यशस्वी पर प्रशासक रहे हैं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन अपने राज्य व उसके शासको के संरक्षण हेतु पूर्ण निष्ठा व लगन से अर्पण कर दिया। प्रताप सिंह ने ईडर के साथ-साथ जयपुर व जोधपुर में भी अपनी सेवाएं दी थी। उन्होनें जयपुर के महाराजा राम सिंह के साथ मिलकर भी कई महत्वपूर्ण कार्य किए थे। महाराजा जसवंत सिंह के बुलाने पर प्रताप सिंह ईडर से इस्तीफा देकर जोधपुर आए थे। जोधपुर पहुंचते ही महाराजा जसवंत सिंह ने उन्हें जोधपुर का प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। प्रधानमंत्री बनते ही प्रताप सिंह ने सर्वप्रथम यहां के विरोधियों का दमन किया था। उन्होनें कर्ज में डूबे हुए मारवाड़ को पुनः आत्मनिर्भर बनाया। प्रताप सिंह ने जोधपुर में राजकोष विभाग, पुलिस विभाग, कानून ,अस्पताल, स्कूल व रेलवे विभाग के क्षेत्र में भी सुधार एवं नवीनीकरण का कार्य करवाया था । एक कुशल योद्धा की तरह सदैव आगे बढ़ने में विश्वास रखने वाले प्रताप सिंह अपनी गाड़ी में बैक गियर तक नहीं रखते थे। जोधपुर में कचहरी भवन, शिप हाउस व पोलो मैदान भी आपने ही बनवाए थे। प्रताप सिंह के युद्ध कौशल, राजनीति व बहादुरी से प्रभावित होकर ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने उन्हें सन् 1916 में कर्नल नियुक्त किया। प्रताप सिंह ने अफगान युद्ध में भाग लिया और विजय प्राप्त की। प्रताप सिंह ने जोधपुर में सन् 1878 में रिसाला (मिलिट्री इन्फेंट्री) की स्थापना की, जिसमें एक सिपाही से लेकर अफसर तक के लिए खादी पहनना अनिवार्य था। प्रताप सिंह स्वयं राजा नहीं बने, परंतु जोधपुर राजघराने की तीन पीढ़ियों के संरक्षक बने। न्याय व कानून व्यवस्था सुधारने के साथ-साथ इन्होंने समाज में फैली कुरीतियों को भी समाप्त करने का प्रयास किया। प्रताप सिंह ने स्वयं भी साधारण घराने में विवाह किया और महाराजा उम्मेद सिंह का विवाह भी एक साधारण परिवार में करवाया। प्रथम विश्व युद्ध में अद्वितीय वीरता दिखाने के कारण अंग्रेज सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि प्रदान की। सर प्रताप सिंह स्वयं अधिक पढ़े- लिखे नहीं थे, परंतु उन्होंने मारवाड़ में शिक्षा का दीपक सदैव प्रज्वलित रखा और कई विद्यालयों का निर्माण करवाया। जिसमें विश्व प्रसिद्ध 'चौपासनी स्कूल' महत्वपूर्ण है। चौपासनी ऐसा स्कूल है जहां से निकले छात्रों में परमवीर चक्र विजेता, शौर्य चक्र विजेता, अशोक चक्र विजेता, पदम श्री पुरस्कार और द्रोणाचार्य जैसे पुरस्कार प्राप्त करने वाले शामिल है। हर क्षेत्र में अपना योगदान देने वाले सर प्रताप सिंह ने फैशन के क्षेत्र में भी अपना विशेष योगदान दिया था। वे बंद गले का कोट (जोधपुरी कोट) व बिरजस पहनने के शौकीन थे। जो उस समय से लेकर वर्तमान समय तक सभी की पहली पसंद है। जोधपुरी कोट को तो राष्ट्रीय परिधान में शामिल किया गया है। सर प्रताप सिंह द्वारा बनवाए गए कचहरी भवन के बाहर उनकी समृति में उनकी एक भव्य प्रतिमा भी स्थापित की गई है। राजा होते हुए भी कभी राज नहीं किया और अपना संपूर्ण जीवन राज्य सेवा में समर्पित करते हुए सर प्रताप सिंह अपने जीवन के अंतिम समय तक जोधपुर रीजेंट के रूप में कार्यशील रहे और संघर्षपूर्ण व गौरवशाली जीवन व्यतीत करते हुए 4 सितंबर 1922 को इस लोक से परलोक सुधार गए थे।

रतन खंगारोत

बलवंत सिंह कोटड़ी को भ्रातृशोक

श्री कल्याण सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक बलवंत सिंह कोटडी के छोटे भाई **श्री कल्याण सिंह कोटडी** का देहावसान 14 अगस्त को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

उदयसिंह राणीगाँव का निधन

श्री उदयसिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **श्री उदयसिंह राणीगांव** का देहावसान 18 अगस्त 2024 को हो गया। उन्होंने अपने जीवनकाल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के 12 शिविर किए जिनमें एक उच्च प्रशिक्षण शिविर, दो माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर, आठ प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर एवं एक विशेष शिविर शामिल हैं। 1990 में आयोजित भीमगोड़ा शिविर उनका प्रथम शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

हर्षोल्लास से मनाई जोरजी चांपावत की 190वीं जयंती

राजपूत समाज द्वारा वीर शिरोमणि जोरजी चांपावत की 190वीं जयंती 17 अगस्त को पाली जिले के खैरवा में हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुरेन्द्र सिंह काकाणी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जोरजी चांपावत का जीवन शौर्य, त्याग और स्वाभिमान की प्रेरणा देता है। ऐसे महापुरुषों से प्रेरणा लेते हुए हमें भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जन्म स्थली स्मारक संस्थान के अध्यक्ष शैतान सिंह गिरवर ने जोरजी चांपावत के इतिहास और जीवन वृतांत की विस्तृत जानकारी दी। दुर्गा कंवर ने अपने गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को जानकर उसके अनुरूप जीवन जीने की बात कही। समंदर सिंह बांता और मनोहर सिंह उमरलाई ने भी अपने विचार रखे। जोरजी चांपावत विकास समिति के अध्यक्ष मालम सिंह हेमावास ने स्वागत उद्बोधन दिया। समिति के सचिव तखत सिंह भालेलाव एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाऊंडेशन के मनोहर सिंह निंबली उडा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन चंद्रवीर सिंह सिसरवादा ने किया। कार्यक्रम के दौरान सभी ग्रामवासियों ने जोरजी चांपावत को पुष्पांजलि अर्पित की और गांव में उनकी अश्वारुढ प्रतिमा की स्थापना के लिए आर्थिक सहयोग जुटाया। कार्यक्रम में राजेन्द्र सिंह गुड़ा सूर सिंह, भगवत सिंह बगड़ी, सवाई सिंह जैतावत, नरपत सिंह गुड़ा श्यामा, चेतन सिंह झाला, अभय सिंह मेड़तिया, विक्रम सिंह खोड़, जुपाराम खैरवा, देवी सिंह दूदिया, भगवान सिंह निम्बली सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही।

राजपूताना समाज दिल्ली ने मनाया 27वां स्थापना दिवस

25 अगस्त को राजपूताना समाज दिल्ली द्वारा अपना 27वां स्थापना दिवस दिल्ली के आरके पुरम सेक्टर 5 में स्थित तमिल संगम ऑडिटोरियम में मनाया गया।

मुख्य अतिथि जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह ने क्षत्रिय महापुरुषों द्वारा जनहित में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हीं की भांति सर्वजन हिताय जीवन जीने की बात कही। कार्यक्रम में सैकड़ों समाजबंधु मातृशक्ति सहित सम्मिलित हुए। दिल्ली एनसीआर में कार्यरत विभिन्न राजपूत संस्थाओं के प्रतिनिधि कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम में राजपूतों की सहयोगी जातियों को समाज से जोड़ने की पहल की गई जिसमें कायमखानी, राजपुरोहित, चारण, रावणा राजपूत आदि समाजों के प्रतिनिधि शामिल हुए और आपसी सहयोग पर चर्चा की। राजपूत समाज के लिए शिक्षा, रोजगार आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों के लिए फरीदाबाद से राजकुल सांस्कृतिक संस्था के अध्यक्ष नारायण सिंह शेखावत स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

काणेटी एवं साणंद में विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन

श्री जय अंबे स्वयंसेवक संघ, काणेटी के तत्वावधान में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 32वां विद्यार्थी (पुरस्कार) प्रोत्साहन कार्यक्रम अहमदेबाद जिले के काणेटी गांव में स्थित प्राथमिक विद्यालय में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के दौरान 61 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में हितेंद्रसिंह खोड़ा, हरपालसिंह खोड़ा, मनहरभाई पटेल (सेवानिवृत्त आचार्य) , डी जी वाघेला काणेटी (सेवानिवृत्त पुलिस उपाधीक्षक), नवल सिंह पीपण (श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद), शक्तिसिंह महादेवपूरा, किशोरसिंह काणेटी, धर्मेंद्रसिंह काणेटी, काणेटी प्राथमिक स्कूल के आचार्य श्रीमति उमाबा वाघेला और अन्य कर्मचारियों सहित ग्रामवासी भी शामिल हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मध्य गुजरात संभाग प्रमुख बटुक सिंह काणेटी भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। देवेन्द्र सिंह काणेटी (प्रमुख श्री जय अंबे स्वयंसेवक संघ काणेटी) ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्री जय अंबे स्वयं सेवक संघ, काणेटी के तत्वावधान में ही श्री एम जे वाघेला स्कूल (वाघेला बोर्डिंग) साणंद में भी 15 अगस्त को कक्षा 10वीं और 12वीं के छात्रों को सम्मानित कर प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकगण और अन्य कर्मचारीगण को यथार्थ गीता पुस्तक भेंट की गई। नटुभा वाघेला (विद्यालय ट्रस्ट के प्रमुख), भावुभा वाघेला गोधावी, जितेंद्रसिंह वाघेला वीछिया, हकुभा वाघेला लेखंबा, युवराज सिंह, जटुभा काणेटी, किरीट सिंह काणेटी, रामदेवसिंह काणेटी सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अर्जुनसिंह काणेटी ने कार्यक्रम का संचालन किया ।

जालौर में झुंझार रतनसिंह को दी श्रद्धांजलि, प्राचीन धरोहर के संरक्षण की रखी मांग

जालौर शहर में सूरजपोल के बाहर स्थित झुंझार श्री रतनसिंह जी भाटी की छतरी पर उनके परिजनों व राजपूत समाज द्वारा रात्रि भजन जागरण और प्रसादी का कार्यक्रम 11-12 अगस्त को संपन्न हुआ। शनिवार रात्रि जागरण कार्यक्रम के बाद रविवार प्रातः समाज के लिए सामूहिक प्रसादी का कार्यक्रम रखा गया जिसमें शहर में रहने वाले राजपूत परिवारों के साथ ही कोटडी, लालिया, बामसीन, महेशनगर और थलवाड़ से भी समाजबंधु सम्मिलित हुए। सभी ने महाराजा मानसिंह जी के समय मातृभूमि की स्वतंत्रता हेतु बलिदान देने वाले जुझार रतनसिंह जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए और उनके पद चिन्हों पर चलकर त्याग और बलिदान की परंपरा को जीवित रखने की बात कही। इस अवसर पर जलंधरनाथ अखाड़ा के संत आनंदनाथ जी, सिवाना के पूर्व विधायक कानसिंह कोटडी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बेदाना में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

जालौर जिले के बेदाना गांव में स्थित आशापुरा मंदिर अभय धाम में 27 अगस्त को बालोत चौहान राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह एवं कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पेरिस ओलंपिक में स्कीट शूटिंग में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली खिलाड़ी माहेश्वरी चौहान ने कहा कि अभिभावकों को अपने बच्चों को सही मार्गदर्शन और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करानी होगी तभी वे श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त कर सकेंगे। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी किशन सिंह जसोल ने कहा कि बच्चों को सही संस्कार देना उनके जीवन की सुदृढ़ नींव रखने के समान है। संत माधव दास ने नशा मुक्ति एवं शिक्षा को महत्व देने की बात कही। डॉ. गणपत सिंह बालोत ने स्वागत उद्बोधन दिया। गढ़ सिवाना के गोपाल राम महाराज के सानिध्य में आयोजित इस समारोह में बालोट पट्टे के आठवीं, दसवीं, बारहवीं, स्नातक व अधिस्नातक में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले छात्र, राजकीय सेवा में चयनित युवा, राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता के प्रतिभागी, स्काउट एवं गाइड, एनसीसी एवं अन्य क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले समाज के 65 युवाओं को सम्मानित किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org